

## छोटी-मोटी अवज्ञाओं से कैसे अपने को बचायें

आज पता नहीं क्यों मैं उदास हूँ, आज मुझमें खुशी नहीं है, आज मेरे में उमंग-उल्लास नहीं है, क्या कुछ करूँ, जैसे-वैसे वैराग्य होता है, उल्टा वैराग्य। बेचैनी क्यों है? ऐसी सोच चलते-चलते कभी-कभार आती है। ऐसा क्यों होता है, इसको जानने की कोशिश करते हैं।

कई बार संगठन में कोई जो हमारे से बड़े और आदर्श होते हैं जिन्हें हम महारथी कहते हैं, वो कोई गलती कर रहे हैं और हम उन्हें देखते हैं तो हमारे मन में विचार आता है कि महारथी भी ये गलती कर रहे हैं! लेकिन ये भी तो हमें समझना चाहिए कि जब वे गलती कर रहे होते हैं तब भला वे महारथी हैं? नहीं ना। इस संदर्भ में परमात्मा ने हमें बहुत स्पष्ट और बार-बार बताया है, ध्यान खिंचवाया है, फॉलो फादर न कि फॉलो ब्रदर-सिस्टर। जिस समय महारथी गलती करते हैं, उस टाइम वो परवश हैं, महारथी थोड़े ही हैं। ऐसी परिस्थिति में हमारी भी तो नासमझी में, अजागरुकता में बाबा ने जो बताया है वो बात याद नहीं रहती कि 'फॉलो फादर' करना है। और हम भी गलती के वश हो जाते हैं। और हमारा भी सूक्ष्म में पाप बन जाता है, पुण्य तो नहीं होता ना। और हम उस परिस्थिति को अपने जहन में बसा लेते हैं और उनसे किनारा करने की कोशिश करते हैं और कई बार उनसे कनेक्शन नहीं रखने की मन ही मन सोच लेते हैं। फिर ये चक्र उल्टा ही चलने लगता। संगठन में दाने से दाना मिलकर माला बनती है ना। हम माला के मणके तो बने लेकिन माला में आना है तो कनेक्शन तो दाने से दाने का होगा ही, ये भी भूल जाते हैं।

गलतियाँ किसी से भी हो सकती हैं, ऐसे में परमात्मा की शिक्षा हमें याद आनी चाहिए कि भले उनमें 99 गलतियाँ हैं लेकिन एक तो विशेषता होगी ना। उस विशेषता को देखना है न कि गलती को। आपने देखा होगा कि गुलाब के पौधे होते हैं तो उसमें फूल भी होते हैं तो कांटे भी होते हैं लेकिन हम किसको देखते हैं, कांटे को या गुलाब को! गुलाब को हाथ में उठायेगे ना! तो बाबा की ये शिक्षा है कि क्या दृष्टि रखो, कैसे देखो और हमेशा शुभ कामना की दृष्टि हो, ये बाबा का डायरेक्शन है। ऐसे दिनभर में न जाने कितनी हम बाबा की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं! भगवान की अवज्ञा करना, ये किस खाते में जायेगा? पाप के या पुण्य के? अगर साक्षी होकर देखें तो एक दिन में भी ऐसी छोटी-मोटी न जाने कितनी सारी अवज्ञाएं निकल आयेगी। इन छोटे-छोटे पाप का प्रभाव हमारे मन-मस्तिष्क पर पड़ता रहता है। जिस कारण ये बोझ कभी न कभी हमारे किसी दिन पर हावी होता है और हमें लगता है कि मैंने तो कोई गलती की नहीं, मेरा तो चार्ट भी अच्छा है, मैंने किसी को दुःख भी नहीं दिया फिर भी मैं उदास क्यों हूँ! खुशी क्यों नहीं है! इसलिए बाबा कहते, हमेशा बाबा की याद में रहकर कर्म करो। जो बाबा ने हमें सावधानियाँ दी हैं, शिक्षायें दी हैं, उनका मनन-चिंतन कर स्पष्ट अपनी बुद्धि में बिठाये ताकि हम ऐसे पाप के प्रभाव के बोझ से बच सकें। हाँ, दूसरा एक कारण पूर्व जन्म का भी हो सकता है जो हमें याद भी नहीं है। पिछले अनेकों जन्मों में न जाने हमसे कितनी गलतियाँ, अवज्ञायें हुई होंगी जिसका भी तो प्रभाव हमारे मन पर पड़ेगा ना।

कोई भी कार्य करते हैं तो हमें कैसे करना, मन में क्या भाव रखना, कैसे देखना और कैसे सोचना, ये सब बाबा हमें रोज़ डायरेक्शन देते हैं, याद दिलाते हैं और भिन्न-भिन्न तरीके भी बताते हैं, उनका चिंतन और मनन करना बहुत आवश्यक है। बिना चिंतन और मनन हमें स्पष्ट नहीं होगा और हम स्वच्छ भी नहीं होंगे। तब सही वक्त पर हमारी निर्णय शक्ति काम नहीं करेगी क्योंकि स्पष्ट नहीं हैं। अब बाबा कहते हैं, अब ऐसे बोझ से अपने को बचाना है क्योंकि हम विश्व के आधारमूर्त और विश्व-कल्याण के निमित्त हैं लेकिन अगर हमने ज्ञान के प्रकाश को अपने मन और अपनी बुद्धि में नहीं रखा तो भीतर अंधकार हो जायेगा और अंधकार में हमारे से ऐसे काम होते रहेंगे और हमें ठोकरें लगती रहेंगी। हम न खुद उससे बच पायेंगे और न दूसरों को बचा पायेंगे।

हम कहेंगे अभी हमने आधा घंटा योग किया, तो आधा घंटा योग किया या बीच-बीच में युद्ध किया? आधा घंटा आप योग में थे या नहीं, यह आप ही जान सकते हो। तो सारा दिन हम यह चेकिंग करें। चेकिंग करेंगे तो चेंज होंगे। सिर्फ चेकिंग करेंगे तो दिलशिकस्त हो जायेंगे। बाबा चाहता है कि हम अपने स्वमान में रहें। देखो हम झाड़ू के चित्र में बीज के साथ बैठे हैं। तो पूर्वज हो गये ना, पूज्य भी हैं, पूर्वज भी हैं। विश्व कल्याणकारी, विश्व परिवर्तक हैं। जहान के नूर, बाबा की आँखों के तारे हैं। बाबा समय प्रति समय कितने स्वमान देते हैं। अमृतवले हम बाबा से शक्ति लेकर अगर सारे दिन का स्वमान और टाइमटेबल सेट करें कि आज सारा दिन इस स्वमान के अनुभव में रहेंगे। अगर रोज़ एक स्वमान भी याद करें और सारा दिन उसी स्वमान में स्थित रहने का अभ्यास करें, तो बहुत मज़ा आयेगा। संगठन में रहने के लिए स्वमान में रहना है और सबको सम्मान देना है। क्योंकि संगठन में भिन्न-भिन्न संस्कार तो होंगे ही। सभी एक नम्बर



### राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

जो बाबा ने कहा है वो होना शुरू हो गया है। हमारी स्पीड भी वही है या नहीं, अभी तो उड़ने का समय आ गया है। बाबा ने अभी चलने को केंसिल कर दिया है। उड़ेंगे तब जब बेफिकर बादशाह होंगे।

इन अलग-अलग डाल-डालियों को इकट्ठा करके एक चन्दन की डाली बनाना है। हम भी मास्टर प्यार के सागर हैं। तो मास्टर ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर, हमारा स्वरूप होना चाहिए। तो शिक्षा भले दो लेकिन क्षमा का स्वरूप हो।

यह हमको चेक करना है कि हम स्वमान में रहते हैं? अपने मन का भी टाइम टेबल बनाओ। किस स्वमान में रहना है, मन्सा से क्या सेवा करनी है? कर्मणा क्या करना है, संगठन में स्नेह से कैसे चलना है। एक-दो से कैसे गुण उठाना है। यह सारा मन का टाइम टेबल रोज़ सुबह अपना बनाना चाहिए। मन का टाइम टेबल बनाने से आपकी चेकिंग बहुत अच्छी हो जायेगी। मन का मालिक बनने के बिना कभी भी ऊंच पद नहीं पा सकते। जो स्व का मालिक नहीं बन सकता, वो विश्व का मालिक कैसे बनेगा! पहले स्वराज्य फिर विश्व राज्य। यह ज्ञान एक दर्पण है, इस दर्पण में अपना मुख आपेही देखो।

अचानक के खेल तो शुरू हो गये हैं ना, अति में जाना बाकी है। संसार में समाचार सुनो तो क्या हो

## स्व का मालिक बनने बिना विश्व का मालिक बन नहीं सकते

तो नहीं होंगे। माला में 108वाँ नम्बर भी तो है ना। बाबा ने सभी की खातिर तो बराबर की। फिर भी 108वाँ नम्बर क्यों बना! यह हरेक का पुरुषार्थ अपना-अपना है। कुछ भी हो संगठन में एक-दो को सम्मान दो और सम्मान लो।

जैसे रास्ते में कोई गिर गया है तो आप क्या उस गिरे हुए व्यक्ति को लात मारेंगे या सहारा देकर उठायेंगे? मर्यादा तो यही है ना कि उसे सहारा दो, खड़ा करो। तो मानो ब्राह्मण परिवार में कोई संस्कार

वश गिर गया है तो हमारा काम क्या है? उसको सहारा देना। सहारा क्या देंगे, शुभ भावना, शुभ कामना। भले वो नहीं देवे, मैं तो दूँ। संगठन में सम्मान देना है। साथ-साथ परिवार में सबके प्रति यही इच्छा रहती है कि यह सुधर जाए। इसको कोई ऐसी शिक्षा दें जो यह अपने को ठीक कर लेवें। लेकिन शिक्षा भी अगर क्षमा भाव के बिना होगी तो शिक्षा रोब का रूप ले लेती है। रोब भी क्रोध का ही अंश है। मम्मा हमेशा कहती थी कि मुझे बाबा ने काम दिया है कि आपको

रहा है! जो बाबा ने कहा है वो होना शुरू हो गया है। हमारी स्पीड भी वही है या नहीं, अभी तो उड़ने का समय आ गया है। बाबा ने अभी चलने को केंसिल कर दिया है। उड़ेंगे तब जब बेफिकर बादशाह होंगे। जो करना है सो अब करना है। चाहे तन से, चाहे मन से, चाहे धन से। अगर बेफिकर बादशाह बनकर रहना है तो कोई हद का संकल्प न हो। बाबा में पूरा फेथ हो। बाबा के निश्चय में सब हुआ ही पड़ा है, इतने निश्चित।

हमारा बाबा रत्नागर, जादूगर, सौदागर है, उससे सौदा किया है। वह दाता, भाग्यविधाता है। ऐसे बाप को अगर न समझा तो कुछ नहीं समझा। बाबा को नहीं समझा माना अभिमान अन्दर बैठा है। कहाँ न कहाँ छिपकर अभिमान हमको यूँ करता है, हम अभिमान के बिगर

नहीं है। बहुत विचारों से वातावरण भारी हो जाता है। मैंने आपका विचार नहीं माना या आपने मेरी नहीं मानी तो स्नेह चला गया। स्नेह चला गया तो रूखा बन गया, शान्ति का वातावरण चला गया। शान्ति के लिए चाहिए प्रेम, प्रेम में चाहिए शक्ति। अगर कोई अपने

## शान्ति के सागर में डुबकी लगायें तो चेहरा चमकता हुआ दिखाई देगा

चल नहीं सकते हैं। जैसे बाबा ने देह का लोन लिया है, पर हमने तो दे दिया है। तन, मन सब ईश्वर अर्थ है। बच्चे लोन पर गोद थोड़े ही लेते हैं। अपना समझकर गोद लेते हैं। हम अधिकारी हैं तो क्या हमारे तन को बाबा सम्भालेगा नहीं!

मेरे को किसी ने पूछा था कि क्या एक मिनट में सब शान्त हो जायेंगे? तो एक मिनट का कितना फायदा है। एक मिनट में 60 सेकण्ड होते हैं। हरेक देखे कि कम से कम बाबा की साठ बातें हमारे पास हैं। कोई भी बात एक सेकण्ड में अपसेट तो नहीं कर देती है। साइलेन्स पॉवर क्या होती है जो अन्दर से यह जानता है, वो अशान्त नहीं हो सकता। बाबा ने ऐसा ज्ञान घोट के पिलाया है जो एक मिनट भी हम अशान्त नहीं हो सकते हैं। जो जितना बड़ा होता है, उसके पास अशान्ति का कारण भी उतना बड़ा होता है। हमें निमित्त बाबा ने बनाया है तो कोई कारण से भी मुझे अशान्ति हुई तो एम्ब्यूलेन्स बुलाना पड़ेगा।

जस्ट एक मिनट क्या है! अपने मन की अशान्ति हम सबको खत्म करनी है ताकि दुनिया से अशान्ति खत्म हो जाये। प्रैक्टिकली अशान्ति का कोई कारण है नहीं, भारी होने का कारण कोई है नहीं। अशान्ति भारी बनाती है, शान्ति हल्का बना देती है। कोई निर्णय करना है हाँ, भले। बहुत विचार की जरूरत



### राजयोगिनी दादी जानकी जी

आपको बाबा के प्यार से, पवित्रता के बल से नहीं चलाता है तो शक्ति नहीं आ सकती है। फिर कोई मच्छर भी काटेगा तो मुंह फूल जायेगा। क्यों, बाबा के लाडले, सिकीलधे बच्चे हैं। दुनिया वालों को इतना फील नहीं होता है, हमको यहाँ

ज्यादा फील होता है। क्यों? बाबा हमारे में नैचुरल शक्ति भर रहा है। देवता पीछे बनेंगे, ब्राह्मण जीवन में ईश्वरीय गुण भर रहे हैं। अगर गुणों को धारण करने पर ध्यान नहीं है तो बाबा के प्यार की शक्ति यूँ नहीं कर रहे हैं। अगर प्यार की शक्ति यूँ करें तो वातावरण को हल्का और शान्त बनाना सहज है। जो मेरे योग्य नहीं है, वह संकल्प में भी नहीं आ सकता। याद रहे कि मैं आत्मा परमात्मा का बच्चा हूँ, तो वातावरण शान्त रहेगा। यह रिहर्सल नहीं करते हैं तो नम्बरवन क्वालिटी नहीं बनते हैं। शान्ति के सागर में डुबकी लगायें तो चेहरा चमकता हुआ दिखाई देगा। शान्ति में प्रेम, प्रेम में शक्ति, शक्ति में खुशी, इससे फिर आनंद स्वरूप स्थिति बन जाती है। इसी भावना से मैंने कहा दिल बड़ी रखो। सेवा हुई पड़ी है, अपना पुरुषार्थ करो, सफलता हुई पड़ी है, फिकर मत करो। हरेक पहले से बेफिकर रहने, राज्य अधिकारी बनने का अभी भाग्य ले लो। ऐसी स्थिति बनाना माना बाबा का नाम बाला करने के निमित्त बनना।

बाबा ने ध्यान खिंचवाया है कि फाउण्डेशन को मजबूत करने के लिए चारों तरफ अपने को चेक करो। माल में कुछ मिक्स कर देते हैं



### राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

## फाउंडेशन मजबूत तब होगा जब चारों बातों में निश्चय होगा...

तो पूरी मंजिल गिर जाती है। ट्रेन का एक डिब्बा भी गिरता है तो कितनों का नुकसान होता है। हम भी ऐसा समझकर चलें कि हम अनेकों के आधार हैं। हम सब निमित्त हैं। फाउण्डेशन हमारा नीचे-ऊपर होगा तो पर्सनल मेरे को तो नुकसान होगा ही, पर उनके कारण अनेकों को नुकसान होगा और भी समझेंगे यह हिल गये तो मेरा क्या होगा! कहीं मेरा भी ऐसा न हो जाए। तो खुद का फाउण्डेशन नीचे-ऊपर होने से अनेकों के निमित्त बन जाते। इसके लिए राय है- एकान्तप्रिय बनो। फालतू अनेक बातों में अपना टाइम वेस्ट नहीं करो। जो सेवा सामने है वह दिल से, प्यार से करो तो अपने फाउण्डेशन को मजबूत रखने के लिए फुर्सत बहुत है। हम सदा निश्चित रहें, करनकरावन्हार बाबा बैठा है। हम दिल से करें लेकिन बाबा को कभी नहीं भूलें। परिवार का स्नेह कितना बड़ा है। परिवार के स्नेह में पियरे नहीं होंगे तो माला का मणका नहीं बन सकते। बाप, परिवार, ड्रामा और खुद में भी विश्वास चाहिए। मेरा ड्रामा में कितना श्रेष्ठ पार्ट है। बाबा ने चुनकर हमें अपना बनाया और साथ-साथ हम भी अपने आपसे पूछें कि मैं बाबा के पास क्यों आई हूँ? भविष्य में ऊंच पद पाना है और ऐसी अवस्था जमाना है जैसा बाबा हमको बनाना चाहता है।

तो अपने आपको चेक करो कि किसी से भी मैं डिस्टर्ब तो नहीं होती? किसी से घृणा तो नहीं है? किसी के ऊपर प्रभावित तो नहीं हूँ? गुणग्राहक बनो, रिगार्ड दो लेकिन फॉलो फादर। जैसे बाबा चला रहा है मुझे ऐसे चलना है। चलकर दिखा रहा है। हर रोज़ सवेरे मुरली हाथ में उठाओ, पढ़ो, सुनो, सारे दिन के लिए बहुत अच्छी रोशनी मिल जाती है। कार्य व्यवहार में चलने के लिए होमवर्क मिल जाता है। हम डायरी लेकर नोट्स नहीं देखते लेकिन बाबा ने जो सुनाया है, वह कितनी बार याद आता है, ऐसा टाइम नहीं हो सकता जो हम इतना बिजी हों, जो मुरली याद ही न आये।